OUR PUBLICATIONS

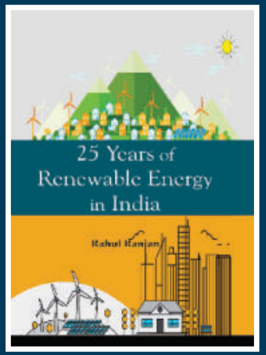

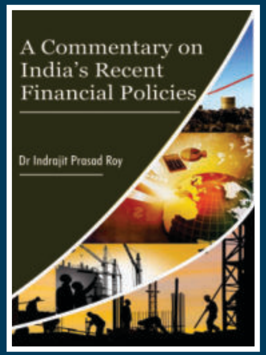

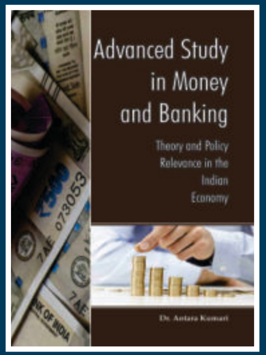

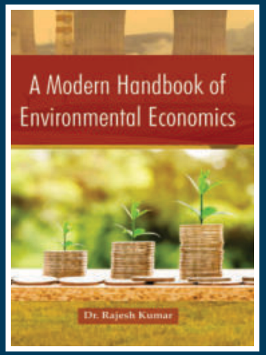

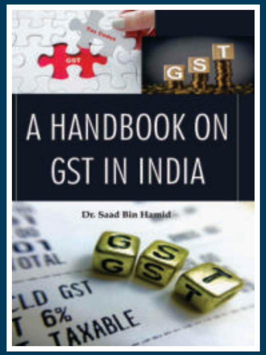

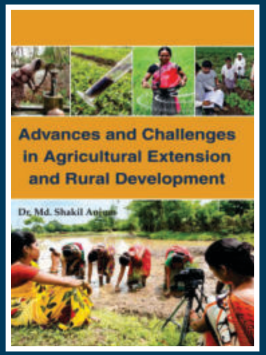

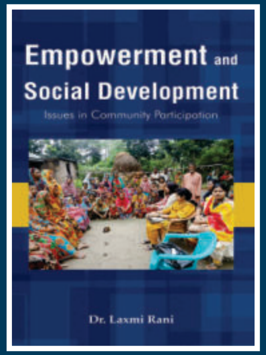

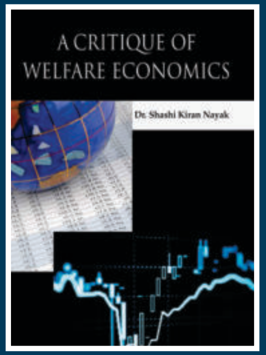

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 12 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 12 अंक : 2 ❑ मार्च-अप्रैल, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबोरोग, ओन्टारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादकीय सम्पर्क:
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916
e-mail : editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

मूल्य: ₹ 2500.00

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

आत्मनिर्भरता संग ड्रैगन को सबक

आज दुनिया भर के सभी देश चीन से आए वायरस से जूझ रहे हैं, 91 लाख लोगों को संक्रमण हो चुका है और 4.72 लाख की मृत्यु हो गई है। यदि इसे चीन का षड्यंत्र न भी माना जाए तो भी यह तो सर्वविदित ही है कि चीन ने इसकी भयावहता को छुपाया और अपनी वैश्विक विमान सेवाओं को जारी रखते हुए जानबूझकर संक्रमित लोगों को दुनिया भर में पहुंचा दिया, जिससे यह संक्रमण फैल गया। इस संक्रमण ने दुनियाभर को अपनी चपेट में ले लिया। चीन के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार से दुनिया भर में न केवल लोग स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे हैं बल्कि एक भयंकर आर्थिक संकट का भी उन्हें सामना करना पड़ रहा है। पिछले 3 माह से ज्यादा, आर्थिक गतिविधियां लगभग पूरी तरह से ठप पड़ी हैं।

पिछले 20 वर्षों में जब से चीन डब्ल्यूटीओ का सदस्य बना है, उसने अपने सस्ते सामानों द्वारा दुनिया भर के बाजारों पर कब्जा कर लिया है। अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, लैटिन अमेरिकी देश सभी चीन के माल पर आश्रित हैं। उनके उद्योग चीन के सस्ते माल से प्रतिस्पर्धा न कर पाने के कारण नष्ट हो चुके हैं। ऐसे में चीन अमेरिका के मुकाबले महाशक्ति के रूप में उभरा है। खरबों डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार के बलबूते उसने 67 देशों को मिलाकर एक बेल्ट रोड परियोजना की भी शुरुआत कर दी है, ताकि वो दुनिया के बड़े हिस्से के इंफ्रास्ट्रक्चर पर कब्जा कर सके और साथ ही साथ अधिकांश देशों को अपने जाल में फंसा पाए। श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर कब्जा चीन की उसी कुटिल नीति का एक उदाहरण है।

चीन ने इस बीच अपनी आर्थिक शक्ति के साथ अपनी सामरिक शक्ति को भी विस्तार दिया है। चीन का अभी तक का इतिहास विस्तार वाद का ही रहा है। 1962 में हमारी हजारों किलोमीटर भूमि पर अधिकार जमा लेना इसी नीति का हिस्सा था। वर्ष 2001 के बाद से उसने अपनी विस्तार वादी नीति को और तेजी से बढ़ाना शुरू किया है। हालांकि अमेरिका ने पहले से ही चीन की धोखेबाजीपूर्ण व्यापार नीति के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा है और उसकी हुआवे जैसी कंपनियों को टेलीकॉम क्षेत्र से बाहर कर रहा है। कोरोना संकट के बाद तो लगभग हर देश चीन से किनारा कर रहा है। भारत समेत कई अन्य यूरोपीय देशों ने भी चीन की घटिया और नकली टेस्टकिट्स की खेपों को वापस भेज कर अपनी नाराजगी जताई है। जहां अमेरिका का चीन के खिलाफ व्यापार युद्ध बदस्तूर जारी है, उधर यूरोपीय समुदाय के देशों ने भी चीन पर विशेष आयात शुल्क लगाने का फैसला किया है। यह इसलिए किया गया है कि यूरोपीय समुदाय के देश यह मानते हैं कि चीन की सरकार अपने निर्यातों पर प्रोत्साहन राशि देकर उनको सस्ता कर यूरोप में भेजती है, जिसके कारण उनके उद्योगों को नुकसान हो रहा है। ऐसा लगता है कि चीन की बेल्ट रोड परियोजना भी खटाई में पड़ने जा रही है।

पहले 67 देश उस में भागीदार बन गए थे, लेकिन उनमें से कई देश तो पहले ही चीन के विस्तारवादी मंसूबों को समझकर कन्नी काटने लगे थे। गौरतलब है कि मलेशिया ने पहले से ही अपनी परियोजना को काफी छोटा कर दिया है। श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह को हथिया लेने के बाद श्रीलंका की जनता और सरकार चीन से नाराज है। कई मुल्कों पर कर्ज के बोझ को बढ़ा देने के कारण भी वहां के लोग और सरकारें चीन से नाराज हैं और उस परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित नहीं हैं। मालदीव, मंगोलिया, मोंटेगरो, पाकिस्तान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, लाओस समेत कई देश चीन के कर्ज जाल में फंस चुके हैं। इटली सरीखे यूरोपीय देश भी जो अमरीका के विरोध के बावजूद, पहले बेल्ट रोड योजना में शरीक हो गए थे, चीन से आने वाले कामगारों से संपर्क के कारण जो कोरोना महामारी की चपेट में आ गए, अब चीन द्वारा इंफ्रास्ट्रक्चर बनाए जाने पर पुनर्विचार करने लगे हैं। अफ्रीकी देश, लेटिन अमेरिकी और ऑस्ट्रेलिया सभी अब चीन से खफा हैं। ऑस्ट्रेलिया के भारत के साथ बढ़ते रिश्तों को लेकर भी चीन आशंकित है। कहा जा सकता है कि भारत समेत पूरी दुनिया के देश चीन के माल का बहिष्कार कर रहे हैं। वहां की सरकारें चीन की कंपनियों से रिश्ते तोड़ रही हैं और चीन के माल को रोकने हेतु टैरिफ और गैर टैरिफ बाधाएं खड़ी कर रही हैं

और चीन के विस्तारवादी रवैये को देखते हुए चीन को सामरिक खतरे के रूप में देख रही हैं। ऐसी परिस्थिति को हम चीन का वैश्विक बहिष्कार भी कह सकते हैं।

चीन दुनिया भर में जनता के गुस्से, बहिष्कार और वहां की सरकारों के चीन के प्रति बढ़ते विरोध के चलते भारी चिंता में है। चीनी सरकार के मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स के लेख इस और स्पष्ट इंगित कर रहे हैं। भारत में अभी भी कई लोग हैं जो यह मानते हैं कि चीन का बहिष्कार फलीभूत नहीं हो पाएगा, क्योंकि हमारी चीन पर अत्यधिक निर्भरता है। मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक्स, दवा उद्योग के कच्चे माल, स्वास्थ्य उपकरण, केमिकल्स, धातुओं, खिलौनों, उद्योगों के लिए कलपुर्जों और कच्चे माल समेत हमारे देश की निर्भरता चीन पर इतनी अधिक है, चीन का बहिष्कार संभव नहीं और चीन के आयात पर रोक भारत की अर्थव्यवस्था के लिए नुकसानदेह हो सकती है। उनका यह भी कहना है कि चीन के माल का पूर्ण बहिष्कार कर भी दिया जाए तो भी उस से चीन को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा, क्योंकि उसके कुल निर्यात 2498 अरब डॉलर के मुकाबले भारत को उसके निर्यात मात्र 68.2 अरब डॉलर के ही हैं यानी मात्र 2.7 प्रतिशत।

हमें समझना होगा कि हमारे देश से चीन को कुल 50 अरब डॉलर का व्यापार अतिरेक प्राप्त होता है जो उसके कुल व्यापार का 11.6 प्रतिशत है। साथ ही नहीं भूलना चाहिए कि अमेरिका का चीन से व्यापार घाटा 360 अरब डॉलर का है जो चीन के व्यापार अतिरेक का 83 फिसदी से ज्यादा है। यदि भारत और अमेरिका दोनों मिलकर चीन के माल को अपने देशों से बाहर कर दें तो चीन का सारा व्यापार अतिरेक समाप्त हो जाएगा। जहां तक भारत की चीन के आयात पर निर्भरता का प्रश्न है भारत की क्षमता को कम आंकना सही नहीं है। आज से 15 साल पहले तक दवाओं का कच्चा माल 90 भारत में ही बनाया जाता था, लेकिन चीन द्वारा डंपिंग के कारण हमारी एपीआई इंडस्ट्री प्रभावित हुई। उसे पुनः स्थापित करने हेतु सरकार ने 3000 करोड रुपये के पैकेज की घोषणा पहले से ही कर दी है। चीन से आने वाले कई उत्पाद जीरो टेक्नोलॉजी के हैं, जिनका उत्पादन भारत में तुरंत शुरू किया जा सकता है। मात्र 2 महीनों में भारत पीपीई किट्स, टेस्टिंग किट्स समेत कई मामलों में आत्मनिर्भर हो चुका है और 50,000 से ज्यादा वेंटिलेटर भी भारत में तैयार हो चुके हैं। भारत की प्रतिभा और क्षमता पर किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। चीन के उत्पादों की कीमत के आधार पर हम उसके आयात को अनुमति दें। हमें देश में उद्योगों के पतन, बढ़ती बेरोजगारी और गरीबी पर भी विचार करना होगा।

संपादक

इस अंक में

प्राचीन धर्मग्रन्थों में पर्यावरण बोध–सुभाष कुमार 1

लोहिया के चौखम्भा की वर्तमान स्थिति–दीपेश कुमार 7

स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहारी महिलाएँ: पृष्ठभूमि और प्रभाव–डॉ० अमित कुमार 11

सांप्रदायिकता की त्रासद और यथार्थ अभिव्यक्ति: तमस–डॉ० शिप्रा शर्मा 16

बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन एक समीक्षा–डॉ० उदय कुमार पासवान 22

बिहार में अगस्त क्रांति का स्वरूप: एक संक्षिप्त परिचय–मो. असलम; राकेश कुमार बैठा 25

अज्ञेय की कविताओं में प्रतीक-योजना–डॉ० प्रीति बैश्य 28

गुलज़ार और भूपेन हाजरिका के गीतों में प्रतिफलित प्रेम-भावना–पूजा बरुवा 36

हिन्दी भाषा की व्युत्पत्ति: एक अध्ययन–डॉ० रीतामणि वैश्य 42

रस-सिद्धांत एवं इसकी रसवादी हिन्दी आलोचना में स्थिति–डॉ० शैल कुमारी वर्मा 49

कॉलेज छात्राओं के स्वास्थ्य पर आहारीय आदतों का प्रभाव–डा० स्नेह लता 57

"स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन मूल्यों (धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सौंदर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखान्त मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य एवं स्वास्थ्य मूल्य) का वर्णनात्मक अध्ययन"–सर्जुन कुमार; डॉ. आशाराम 61

भारतीय समाज में बढ़ती समाजिक समस्याएं–अजय कुमार 69

तीन राष्ट्रीय समाचार पत्रों में आने वाले राजनितिक समाचारों का विश्लेषण-दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण व पंजाब केसरी समाचार पत्रों का एक तुलनात्मक अध्ययन–सुधीर कुमार 74

बुद्धकालीन भारत में सामाजिक घटक–अनुज कुमार 81

समकालीन हिंदी काव्य यात्रा 1975 से 1990–अरमान आनंद 85

भाजपा और राष्ट्रवाद का उभरता विमर्श : एक विश्लेषण–डॉ० पंकज कुमार राय; प्रीति रानी 93

संत गरीबदास का सामाजिक-चिन्तन–डॉ. सुनील कुमार 99

"सिस्टर निवेदिता का भारतीय महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण"–डॉ. रामजी सिंह 106

"स्वामी विवेकानंद के राजनीतिक विचार"–डॉ. मनोज कुमार सिंह 110

"राजनीतिक यथार्थवाद और मैकियावली का राजनीतिक चिन्तन"–डॉ. आलोक कुमार 113

"भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति नरेन्द्र मोदी सरकार की प्रतिबद्धता: एक अवलोकन"–डॉ. अमिताभ त्रिवेदी 118

"गुटनिरपेक्षता में भारत की भूमिका: एक अवलोकन"–डॉ० अनिल शर्मा 125

"वर्त्तमान बिहार में महिला सशक्तिकरण विशेषत: पंचायती राज के सन्दर्भ में"–आशुतोष सिंह जेलियाँग 129

"सार्क और भारत"–डॉ० अशोक कुमार 133

"मातृ एवं शिशु के उत्तम स्वास्थ्य में यूनिसेफ का कार्य व योगदान"–डॉ० कुमारी सुनीता 140

"अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की रणनीति"–डॉ० नमिता कुमारी 144

"वैदिक शिक्षा में गुरू-शिष्य परम्परा"–डॉ० पूर्णनाथ कुमार 150
"बंधनों से मुक्त होती स्त्री और उसका संघर्ष"–डॉ० संजय कुमार सिंह 156
"ग्रामीण से नगरीय प्रवास का नियन्त्रण तथा ग्रामीण सेवा केन्द्र: पटना जिला के एक गाँव का एक सूक्ष्मस्तरीय अध्ययन"–डॉ० विजय मिस्त्री 161
बिहार के दलितों का नक्सलवादी आन्दोलन को समर्थन एवं सक्रिय सहयोग–डॉ० पवन कुमार 167
इक्कीसवीं सदी में महिला सशक्तिकरण–सुनीता कुमारी 172
बुद्धकालीन भारत में सामाजिक घटक–अनुज कुमार 176
भारत में गठबंधन राजनीति: समस्या एवं समाधान–डॉ० सतीश कुमार वर्मा 180
बुरी आदत और लत–डॉ० राम बिनोद 185
छायावाद का राष्ट्रीय स्वर–भास्कर मिश्र 188
राधाकृष्ण : एक प्रसिद्ध कथाकार–प्रमोद कुमार 192
सामाजिक सुरक्षा एवं समाज कल्याण की अवधारणा–डॉ. संजीव कुमार 196
जिजीविषा और संघर्ष की 'कर्मभूमि'–शीतांशु 199
लोकप्रिय साहित्य में 'उपन्यास' का बदलता परिवेश एवं भाषा–डॉ० काना राम मीना 203
सांस्कृतिक विशेषीकरण के संदर्भ में जनजातियों का वर्गीकरण: एक विश्लेषण–डॉ० विकास कुमार 210
लैंगिक न्याय का सामाजिक परिदृश्य–डॉ० स्मिता 214
नवीन राष्ट्रीयता के अग्रदूत स्वामी दयानंद सरस्वती–डॉ० गुड्डी कुमारी 219
प्राचीन काल में बाल विवाह: एक ऐतिहासिक अवलोकन–डॉ० पूर्णिमा कुमारी 223
वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा: विकास व चुनौतियाँ–डॉ. सुजीत कुमार 227
बावड़ियाँ निर्माण की रूपरेखा–बाबू लाल 232
प्रेस और स्वतंत्रता आन्दोलन–डॉ. बिजेन्द्र कुमार सिंह 236
निगमित अभिशासन: एक समग्र अवलोकन–डॉ. अमरनाथ पासवान; मनीष चन्द्रा 241
शोध क्षेत्र में कम्प्युटर का महत्त्व एवं प्रयोग–दिलीपभाई जयसिंग वसावा 247
थेरीगाथा में वर्णित महिलाओं की स्थिति: एक विश्लेषण–अभिनव अर्चना 252
अशोक: एक अनोखा सम्राट युद्ध से शांति की ओर.......–डॉ. दीपक कुमार 259
बिहार में अलगाववादी साम्प्रदायिक तनाव में जिन्ना की भूमिका–डॉ. रुमा कुमारी 266
कुपोषण की समस्या का विशुध अध्ययन–डॉ० नीलम कुमारी 271
राँची शहर में जनजातियों के आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों पर प्रवास का प्रभाव–भुवनेश्वर कुमार मंडल 275
पर्यावरणीय चिन्तन: अतीत एवं वर्तमान–डॉ. रितेश भारद्वाज 287
गांधी, लोहिया और उपाध्याय का भारत–संजय कुमार सहनी 292
केवल शोक-गीति नहीं है 'सरोज स्मृति'–डॉ. हरीश अरोड़ा 296
बिहार की स्वतन्त्रता में बक्सर प्रतिरोध का प्रभाव–आशा शर्मा 301
हिमाचल प्रदेश के विशेष संदर्भ में पर्यावरणीय-पर्यटन की अवधारणा–ईरा भारद्वाज 308
भारतीय किसान के जीवन की यथार्थता–सपना रानी 313
वाल्मीकि रामायणकालीन समाज और नृत्यकला–मनीष कुमार 316

ममता कालिया कृत उपन्यास 'प्रेम कहानी': एक मूल्यांकन–डॉ. लवलीन कौर; डॉ. सुनील कुमार 320

ममता कालिया के उपन्यास में नारी चेतना–मोनिका कुमारी 324

महिला उद्यमिता: समस्या समाधान एवं विकास की संभावनाएँ–डॉ. मणि भूषण कुमार 330

किशोरियों में प्रजनन स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान एवं यौन सम्बन्धी मिथकों का अध्ययन–अर्पणा सिन्हा 337

सोनारगढ़ (जैसलमेर) दुर्ग का स्थापत्य एवं जल प्रबंधन व्यवस्था का विश्लेषणात्मक अध्ययन–चोथूराम 343

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शान्ति शिक्षा की पाठ्यचर्या–अश्विनी कुमार पाठक; प्रोफेसर एन०पी०भोक्ता 349

नाट्यानुभूति और रंगानुभूति का अंतर्सम्बन्ध–डॉ. प्रियंका मिश्र 355

पंचायती राज सशक्तिकरण और सुशासन–संतोष कुमार 358

"मलिन बस्तियों की स्वास्थ्य-संबंधी समस्यायें: बहादुरपुर, पटना के परिप्रेक्ष्य में एक भौगोलिक अध्ययन"–निरूपमा सुरभि लकड़ा 363

बिहार में राष्ट्रीय चेतना का विकास और सांप्रदायिक सद्भाव–डॉ. रूमा कुमारी 372

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका: गाँधी जी के संदर्भ में–संजय कुमार सहनी 377

माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० रतन कुमार भारद्वाज; प्रभुदयाल 382

भारत रुस सम्बन्ध 21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में राजनीतिक सम्बन्धों का एक अध्ययन–अमित कुमार 387

सन् अठारह सौ सन्तावन और कुँवर सिंह–अरविन्द कुमार सिंह; डॉ० ओम प्रकाश राय 391

बिहार में असहयोग आन्दोलन और राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका: एक अध्ययन–अखिलेश कुमार 396

भारतीय राष्ट्रवाद पर औपनिवेशिक इतिहासलेखन–बिपिन कुमार 402

कुटीर उद्योगों के विकास में बिहार के महिलाओं की भूमिका–चन्द्र किशोर 407

बौद्ध साहित्य में नारी का स्थान–डॉ० रिंकु कुमारी 412

मैथिली भाषाक भौगोलिक रूपरेखा–डॉ० रीता कुमारी 416

भारत में बाल-श्रम और बाल श्रम अधिनियम: एक विश्लेषणात्मक अधिनियम–डॉ० साधना कुमारी 419

गुप्त काल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति–डॉ० संजय कुमार 423

धूमिल की कविताओं में सामाजिक चेतना–डॉ० शालिनी मिश्रा 426

चिंतकों की दृष्टि में आहार की समस्यायें–डॉ० सुनीला कुमारी 432

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्यिक अनुवाद की व्यावहारिक जटिलताएँ–जितेन्द्र कुमार गिरि 435

कोयला उत्खनन एवं ग्रामीण सामुदाय: समाजिक विकास का अध्ययन (छ.ग. के बिलासपुर सभांग के विशेष सदर्भ में)–सुनील कुमार; श्रीमति डॉ. ऋचा यादव

औपनिवेशिक काल में बिहर के किसानों की विभिन्न समस्याएँ एवं आन्दोलन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–मो० शाहनवाज आलम 449

मौर्यकालीन समाज में गुलाम वर्गो के जीवन स्तर में आये परिवर्त्तन का समाज पर प्रभाव–डॉ० मनीष कुमार 454

''कृष्णा सोबती द्वारा रचित ज़िन्दगीनामा उपन्यास की भाषा में प्रयुक्त कारक बोधक परसर्गों का विवेचन''–देवानन्द सिंह; डॉ. जीत सिंह 457

''परिस्थितिकी पर्यटन का भारत के सामाजिक पर्यावरण पर प्रभाव''–सीमा खाड़िया 464

शहरी एवं ग्रामीण विज्ञान वर्ग के कक्षा 11वीं मे अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की स्वाध्याय आदतों का तुलनात्मक अध्ययन–सुनीता अग्रवाल; डॉ० योगेश कुमार सिंह 471

राग दरबारी का यथार्थ और व्यंग्य की सार्थकता–डॉ. नीलू अग्रवाल 476
'मैला आँचल' उपन्यास में राजनीतिक यथार्थ: एक अध्ययन–जैनेन्द्र चौहान 480
"संन्यासवाद: शास्त्रीय परम्परा और व्यवहार के सन्दर्भ में"–डॉ. सरोज कुमार सिंह 483
सांप्रदायिकता की त्रासद और यथार्थ अभिव्यक्ति: तमस–डॉ. शिप्रा शर्मा 488
आधुनिक भारतीय शिक्षा और स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन–डॉ० अनिल कुमार तेवतिया 495
विपिन किशोर सिन्हा के उपन्यास 'क्या खोया क्या पाया' में मूल्य-संक्रमण–विभा रीन; डॉ. सुनील कुमार 499
भारतीय लोकतंत्र एवं नई शिक्षा नीति 2020: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ. विजय शंकर विक्रम 504
महिला कुपोषण में महिला स्वयं जिम्मेवार एक अध्ययन–खुशबू कुमारी 512
असम में भक्ति साहित्य और श्रीमन्त शंकर देव–डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र 518
अद्वैत वेदान्त एवं सफूी मत: सापेक्षी मूल्यांकन–डॉ. कुमार वरुण 523
भारत में कृषि श्रमिकों की प्रास्थिति–दिपेन्द्र सिंह1 529
महाकाव्य परम्परा और श्रीहर्ष : एक समीक्षण–प्रो. प्रसून दत्त सिंह 536
परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में भारत-बांग्लादेश सहयोग–दीपा कुमारी 539
राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन–डॉ. गीता सहाय 542
"भारतीय संस्कृति और श्रीरामकथामृत की सांस्कृतिक परम्परा"–कुमारी लुसी 548
"युवा और महिला सशक्तिकरण में शिक्षक शिक्षा की भूमिका"–श्री सच्चिदानन्द पाठक 550
भारतीय कृषि क्षेत्र में व्यापार उदारीकरण का प्रभाव–सोनी कुमारी 557
'रूकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में नारी के विविध रूप–डॉ० नारायण 564
दक्षिण-पूर्व एशिया में रामायण की प्रासंगिकता–मंदीप कुमार चौरसिया 573
तुलसी की रामकथा के नवीन आयाम–डॉ. सुनीता चौहान 578
प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप–डॉ. प्रदीप कुमार सिंह 582
हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श–डॉ. कोल्हे डी.बी. 586
पंचायती राज व्यवस्था का ऐतिहासिक दृष्टिकोण–स्वीटी रानी 590
होड़ोपैथी: झारखंड के आदिवासियों की पारंपरिक चिकित्सा व्यवस्था–ममता कुमारी 593
देवकवि–डॉ. सी.एल. सोनकर 598
वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शान्ति शिक्षा की पाठ्यचर्या–अश्विनी कुमार पाठक; प्रोफेसर एन०पी०भोक्ता 609
महात्मा गांधी का स्वच्छता अभियान–डॉ० सुनिता कुमारी 615
वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा: विकास व चुनौतियाँ–डॉ. सुजीत कुमार 619
'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में अभिव्यक्त लैंगिक असमानता: एक विश्लेषण–डॉ. उमा देवी 624
शिक्षा का आन्तरिक और बाह्य स्वरूप (संस्कृति और सभ्यता के संदर्भ में शिक्षा)–डॉ. रामावतार 629
भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में सामजिक समस्याओं का अवलोकन–रुमैसा नजीर 634
शिक्षा, समाज एवं संस्कृति–डॉ. अरूण कुमार पंडित 640
21वीं सदी में भारत और अमेरिका के संबंध–अरबिंद कुमार 642
सिवान जिला के अनुसूचित जाति के शैक्षिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान का प्रभाव:
एक भौगोलिक अध्ययन–रमेश कुमार रजक 645

बाजार की अवधारणा के क्षेत्र में हिंदी और प्रयोजनमूलक हिन्दी की आश्यकता और अनुप्रयोग–डॉ. प्रशांत प्रसाद गुप्ता 653
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के जाति प्रथा का उन्मूलन–डॉ. अंशुल पाण्डेय 658
स्त्री का जीवन संघर्ष–डॉ. भगवती देवी 661
भारत के आजदी के पश्चात से वर्तमान तक चीन के साथ सम्बन्ध–महेश कुमार पिन्टू 666
ममता कालिया की बोलने वाली औरतों में : शादीशुदा नारी–डॉ. सिजू पी वी 671
भारतीय जीवन बीमा निगम के समाजोमुख्य कार्यो का विश्लेषाणात्मक अध्ययन
–डॉ. नवीन अग्रवाल; डॉ. अजय कुमार उपाध्याय 674
नवादा जिला के फसल प्रतिरूप पर आधुनिक कृषि पद्धति का प्रभाव: एक भौगोलिक विश्लेषण–डॉ. अमर कुमार 680
मिश्रित विचारधारा के पुंज : डॉ. सत्येन्द्र नन्दा–सोमा देवी 687
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और इतिहास लेखन : एक समग्र दृष्टिकोण–डॉ. चन्दन कुमार 695
मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी का संघर्ष–डॉ. मिनाक्षी 701
गांधी का चंपारण सत्याग्रह एवं पंडित राजकुमार शुक्ल–डॉ. संजय कुमार 705
भूमि उपयोग का वर्गीकरण तथा प्रतिरूप: भागलपुर जिला के संदर्भ में–रवीन्द्र कुमार प्रकाश 711
झारखण्ड में जनजातीय साक्षरता एक भौगोलिक अध्ययन–निरुपमा सुरभि लकड़ा 716
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अध्यात्मिक मूल्यों
का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. बृजेश चन्द्र त्रिपाठी 727
प्राचीन भारत में पशुपालन-विधि एवं उपसंहार : एक अवलोकन–डॉ. केशव कुमार रंजन 736
वाजपेयी नीति की प्रासंगिकता–डॉ॰ रोहित कुमार 743
संवैधानिक विकास के प्रक्रिया के दौरान बैवेल योजना एवं कैबिनेट मिशन के महत्व
का एक अवलोकन–डॉ. सुधांशु कुमार 748
अनुच्छेद 370 और 35-ए की समाप्ति का निहितार्थ–डॉ. अबिनाश प्रताप सिंह 752
भारतीय दार्शनिकों का शिक्षा में योगदान–डॉ. मधु सिंह 758
महात्मा गाँधी और राष्ट्र: एक अध्ययन–डॉ. प्रियंका सिंह 762
व्यावसायिक शिक्षा के प्रति लड़कियों के अभिभावकों का दृष्टिकोण–डॉ. शादाब नवाज़ 768
आचार्य श्री विद्यासागरजी की शैक्षिक संकल्पना–श्रीमती प्रेरणा जैन; डॉ. दीपा जैन (प्राचार्य) 772
महिलाओं में कैल्शियम की कमी की समस्या एक अध्ययन–चेतना; डा. चन्द्रा कर्ण 779
धर्म आधारित लैंगिक विभेद के प्राचीनतम ऐतिहासिक एवं पारंपरिक परिप्रेक्ष्य–आशुतोष पाण्डेय 782
विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी का धर्म एवं सम्प्रदाय सम्बन्धी विचार–डॉ. अमरजीत कुमार 786
शिक्षा प्रणाली पर कोविड-19 का प्रभाव (ऑनलाइन शिक्षा के विशेष संदर्भ में)–राकेश शर्मा 792
वैश्विक महामारी कोविड-19 से उपजे संकट से निपटने में गाँवों की भूमिका–देवेन्द्र कुमार सिंह 798
भारत में आदिवासी वन अधिकारों का एक समाजशास्त्रीय विश्लेशण–दीपक कुमार खरवार 801
भारतीय युवाओं में विवाह पूर्व यौनिक व्यवहार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–सुबोध कान्त 808
समकालीन भ्रष्टाचार की यथार्था की व्यंग्यपरक अभिव्यक्ति नाट्य साहित्य के संदर्भ में–गुरमीत सिंह 816
महिलाओं में सशक्तिकरण : एक प्रभावशाली परिवर्तन–डॉ. निखिल कुमार 819
भारतीय समाज में प्रौढ़ कुमारियाँ और अकेली स्त्रियाँ–डॉ. विकास कुमार 822

इतिहास-लेखन में लैंगिक विमर्श : एक अध्ययन–डॉ. रागिनी दीप 826

प्रो0 हरिमोहनझाक मैथिली साहित्यमे व्याप्त दार्शनिक विचार–डॉ. रश्मि कुमारी 831

गाँधी और सत्याग्रह : एक अध्ययन–बिपिन कुमार 836

भारत व नेपाल के बीच सामारिक सम्बन्ध–डॉ. मंजूषा रानी 839

गाँधीजी का महिला दर्शन : एक विश्लेषण–डॉ. पूनम डागर 849

ब्रिटिश कालीन भारत में अर्थ नीति का लेखा जोखा–प्रज्ञा शिखा 854

भारतीय चेतना में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: एक अध्ययन–दिवाकर पासवान 860

तिरहुत प्रमण्डल में जनसंख्या वितरण का भौगोलिक अध्ययन–डॉ. चाँदनी चावला 865

समकालीन हिन्दी कहानी में मानवीय संवेदना–डॉ० विनय कुमार 875

अपने लिंग के संबंध में बिहार के हाईस्कूल के छात्रों की संज्ञानात्म कक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन–अदनान अहमद 878

महर्षि अरविन्द घोष के अनुसार नैतिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय शिक्षा की उपादेयता–डॉ. ममता सक्टा; डॉ. विनय कुमार 881

एचआईवी/एड्स और गर्भावस्था–डॉ. अरूणा कुमारी 886

भारत छोड़ो आन्दोलन में शाहाबाद आर्य समाज का योगदान–डॉ. बिनोद कुमार 889

गुटनिरपेक्षता का वर्तमान समय में प्रासंगिता–नरेन्द्र ठाकुर 895

गुरुमुखी लिपि एवं ब्रजभाषा में रचित पंजाब का अल्पज्ञात कृष्ण काव्य (भाई गुरदास पुस्तकालय में सुरक्षित पांडुलिपियों का संदर्भ)–डॉ. सुनीता शर्मा 900

भारत-बांग्लादेश का मित्रवत संबंध एवं व्यापार: एक राजनीतिक विश्लेषण–अवधेश कुमार सिंह 911

पंडित जवाहर लाल नेहरु : आधुनिक भारत के निर्माता–पल्लवी 915

सारण जिले के कृषि उत्पाद एवं भंडारण की व्यवस्था का अध्ययन–डॉ. पंकज कुमार 918

भारतीय समाज में बढ़ती समाजिक समस्याएं–अजय कुमार 921

आधुनिक भारत में औद्योगिक विकास की पृष्ठभूमि : एक अध्ययन–डॉ. अनामिका ब्रजवंशी 926

भारत में क्रांतिकारी आंदोलन एवं उसकी प्रमुख गतिविधियां (बिहार के विशेष संदर्भ में)–डॉ. अनंता कुमारी 931

राष्ट्रीय आंदोलन एवं प्रजामंडल आंदोलन का अन्तर्सम्बन्ध: प्रगति, प्रभाव व सीमाएँ–डॉ. अरुण कुमार निराला 936

शैक्षणिक विकास–डॉ. राजीव रंजन वर्मा 942

आधुनिक भारत में आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में औपनिवेशिक पहल: एक अध्ययन–दिलीप कुमार 948

भारत में दलित आंदोलन एवं पेरियार की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ. प्रज्ञा कुमारी 953

भारत में औपनिवेशिक शिक्षा के विमर्श बिन्दु, स्वरूप एवं नीतियाँ : एक अध्ययन–डॉ. संतोष कुमार 958

औपनिवेशिक मनोवृतियों के विरूद्ध भारतीय वैज्ञानिक समुदाय का संघर्ष, तकनीक व सफलताएं : एक अध्ययन–डॉ. वेदवती 964

श्री अरविन्द का विकास सिद्धान्त–डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह 969

श्रीमद्भागवत गीता में ज्ञान मार्ग–डॉ. अजय कुमार सिंह 971

धर्म एवं धर्म दर्शन–डॉ. रामाशीष मालाकर 973

महिला उद्यमिता : समस्या समाधान एवं विकास की संभावनाएँ–डॉ. मणि भूषण कुमार 975

भारत में एकता–डॉ. अर्चना कुमारी 982

बिहार में महिला सशक्तीकरण का स्वरूप एवं महिला आरक्षण : चुनौतियां एवं संभावनाएं–डॉ. शशि रंजन कुमार 985

बिहार के जिलों में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में स्थानिक असमानता–अल्पना कुमारी 993
वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्द्धा और भारत–मुकेश कुमार 1004
वर्त्तमान परिवेश में कोरोना आपदा या अवसर : एक अध्ययन–डॉ. प्रगति 1010
प्रारंभिक भारतीय इतिहास में जेंडर संबंध और राष्ट्रवादी इतिहास लेखन–प्रभात कुमार 1012
लैंगिक समानता : एक सुंदर और सुरक्षित समाज की नींव–सोनी कुमारी 1016
डॉक्टर लोहिया के धर्म और राजनीति : एक सिंहावलोकन–डॉ. रणधीर कुमार राणा 1018
''दू पत्र'' उपन्यास में भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृतिक विवेचन–प्रीति कुमारी 1023
कार्ल मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धांत एवं इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन–डॉ. महेन्द्र पासवान 1026
मत्स्य उद्योग का वरदान–उमेश कुमार सिंह 1033
''हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना''
–शिव शंकर यादव; डॉ. जीतेन्द्र प्रताप 1036
परंपरागत भारतीय बैंकिंग व्यवस्था–डॉ. कुमार सुधांशु 1041
समकालीन भारत में सेकुलर/लोकतांत्रिक और बहुलतावादी राष्ट्रवाद : बदलता विमर्श–अमृता कुमारी 1045
कल्हण का जीवनवृत एवं उनकी रचनाएँ–संध्या कुमारी 1051
मुगलकालीन गाँवों में सामुदायिक जीवन–डॉ. मोहम्मद तसद्दुक 1056
मुगलकालीन (1658 ई.-1719 ई.) भारत में आर्थिक स्त्रोतों का विवेचनात्मक अध्ययन–डॉ. सुरेन्द्र कुमार सिंह 1060
हिन्दी की चिंतन परंपरा में काव्य लक्षण–डॉ. संजीव कुमार 1063
भारत में राजनीतिक सहभागिता एवं महिलाएँ : एक अध्ययन–विकास कुमार 1066
धर्म और मानवीय मूल्य–डॉ नलिनी श्रीवास्तव 1072
अवध की वीरांगना : बेगम हजरत महल–यासमीन खानम 1075
भारतीय भाषा दर्शन में स्फोटवाद की अवधारणा–डॉ० नागेन्द्र तिवारी 1079
प्राचीन भारत की राजनीति पर शुक्रनीति का प्रभाव–डॉ० सुनील कुमार 1083
काँग्रेस, गाँधी और किसानों के मुद्दे 1912-1922 : एक अध्ययन–डॉ. नेहा कुमारी 1086
गुप्तकाल में समाजिक परिवर्तन के आर्थिक आधार–डॉ. रेखा चौधरी 1091
कार्यरत महिलाओं के कार्यकारी संबंध, पारिवारिक सामंजस्य, असंगतियाँ तथा उनके
कारण और परिणाम–डॉ. रीना कुमारी 1095
दिवाकर के कथा साहित्य में युगबोध–डॉ. बलराम कुमार 1099
भूमंडलीकरण की प्रवृत्तियाँ और और हिन्दी उपन्यास–विभा कुमारी 1103
गाँधीवाद : वैश्विक विकास का राजमार्ग–चंदा कुमारी 1106
गोदान की रचना-दृष्टि–चन्दीर पासवान 1110
भारत में राजनीतिक में अंतर्निहित भ्रष्टाचार के विविध आयाम–डॉ. नीतू गौरव 1114
अज्ञेक के कथा-साहित्य में प्रेम की अभिव्यंजना–डॉ. अनिल कुमार 1117
भक्ति काव्य : बाबा नागार्जुन–डॉ. सीमा कुमारी झा 1122
स्वाधीनता-संग्राम में प्रेस की भूमिका–डॉ. सोनी कुमारी 1125
लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में लोक-विश्वासों की व्यंजना–डॉ. उमेश कुमार शर्मा 1128

सृजन के धरातल पर कीर्तिनारायण मिश्र का मैथिली गद्य-साहित्य–नीतु कुमारी 1132
निराला का साहित्य एवं कला-संबंधी दृष्टिकोण–डॉ. शर्मिला कुमारी 1138
गुलाम भारत के धार्मिक आन्दोलन की पृष्ठभूमि–डॉ. प्रज्ञा कुमारी 1141
नक्सलवाद की उत्पत्ति एवं विकास बिहार के परिप्रेक्ष्य में–डॉ. प्रदीप कुमार 1146
धर्म और साम्प्रदायिकता के संबंध में प्रेमचन्द की भूमिका–डॉ. सुनील कुमार 1151
गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य मेंश्रृंगार-तत्त्व–डॉ. अजीत कुमार 1158
कविवर नेपाली के गीतों में उनका प्रकृति प्रेम–डॉ0 आर्य सिन्धु 1161
लिली रेक रचना दृष्टि : भाषा एवं शिल्प–कुमकुम कुमारी 1166
ललित-साहित्यक मूल कथ्य : भाषा एवं शिल्प–डॉ० गोपाल कुमार 1170
चन्द्रगुप्त मौर्य का इतिहास–बासुदेव शाह 1176
उपनिवेशवाद का अर्थ और इतिहास –डॉ. मंजुली कुमारी 1180
हिन्दी के संस्मरण साहित्य में दिनकर का अवदान–डॉ. महेश कुमार 1185
प्रसाद की बिम्ब परक कविताओं में सौंदर्य: एक अध्ययन–डॉ. उपेन्द्र प्रसाद 1188
संस्कृत साहित्य में पर्यावरण का महत्व–डॉ. इंदु कुमारी 1191
वृद्धावस्था की समस्याएं और देखभाल की जरूरत–डॉ. प्रज्ञा कुमारी 1197
भगवान महावीर का साधना काल–डॉ. मनोज कुमार 1201
तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार–अमित कुमार पाण्डेय 1206
भूमंडलीकरण के दौर में भाषा का संदर्भ : एक अध्ययन–डॉ0 सुधीर कुमार 1209
बिहार में भारत छोड़ों आंदोलन की प्रकृति : एक अध्ययन–डॉ0 अंगुरी बेगम 1213
वज्जिकांचल की धार्मिक अवस्था : लोक देवता एवं स्थानीय संस्कृति के विशेष संदर्भ में–डॉ0 संतोष कुमार 1218
ध्रुवपद और अमता घराना–डॉ० कामेश्वर कुमार 1223
मानव जीवन में सांगीतिक उपचार–डॉ. चन्देश्वर प्रसाद कुशवाहा 1227
संगीत की परम्परा–डॉ. सुरेन्द्र कुमार राम 1230
धर्म और साम्प्रदायिकता के संबंध में प्रेमचन्द की भूमिका–डॉ. सुनील कुमार 1233
'हिन्द स्वराज' में वर्णित विचारों का आज के भारत के लिए प्रासंगिकता का सवाल–डॉ0 शैलेन्द्र कुमार सिंह 1240
कवि की छाया प्रतिच्छाया–डॉ. मानस कुमार 1249
आत्महत्या का मनोविकार : कारण एवं निदान–डॉ0 अस्मिता सिंह 1253
भारत छोड़ों आंदोलन में आजाद दस्ता की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ0 संजीव कुमार 1258
नागार्जुन की कविता में सौन्दर्य बोध–डॉ. सीमा कुमारी झा 1263
अमरजीक व्यंग्य स्तम्भ सबमे राजनीतिक ओ सामाजिक विवेचन–डा. शीतल कुमारी 1267
हृदयेश के उपन्यासों में परिवेशगत यथार्थ–लक्ष्मण कुमार पंकज 1271
21वीं सदी की मीडिया और हमारा समाज–नेहा कुमारी 1274
नागार्जुन का वृद्ध विषयक दृष्टिकोण–डॉ. ऋचा कुमारी 1277
उदय प्रकाश की कहानियों का सामाजिक परदृश्य–सरस्वती पाण्डेय 1281
कठगुलाब : सत्री-जीवन का संघषगाथा–सुशील कुमार मंडल 1284

विद्यापति-पदावली मेंशृंगारिकता–डॉ. शोभा कुमारी 1288
आवां : स्त्री-पीड़ा की अभिव्यक्ति–रूपाली यादव 1294
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'इदन्नमम् : एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ. कुमारी निश्चय 1300
आधुनिक भारत में दलितोत्थान आंदोलन–डॉ0 रेणु कुमारी 1303
प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति: एक अवलोकन–डॉ. सुजीत कुमार सिन्हा 1305
पूर्णिया जिले में बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन में सरकार की नीति एवं परिणाम–मो. नौशाद 1311
बिहार के आदिवासी–मिन्टु कुमारी 1314
ग़ज़ल का अभिप्राय एवं परिभाषा–रेशमा मोहन काम्बले 1317
बिहार में उभरता हुआ राष्ट्रवाद एवं पत्रकारिता–डॉ. मुकुल कुमार शर्मा 1321
मध्यकालीन मिथिला में शैक्षणिक विकास–डॉ. पप्पु कुमार 1324
भारत में सूचना प्रौद्योगिकी–डॉ. सुनील कुमार 1329
जीवन के अनुभवो से विश्व के श्रेष्ठतम साहित्यकार बनने का सफर- मैक्सिम गोर्की–अंकिता कुमारी 1332
फैजाबाद जनपद में ग्रामीण औद्योगिक विकास की संभावनाएँ–डॉ. कृष्ण कुमार सिंह 1336
सिद्ध एवं नाथ साहित्य–भोला प्रसाद यादव 1340
कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता–शिव कुमार सिंह 1345
1857 : प्रारंभिक भारतीय विमर्श का एक तुलनात्मक अध्ययन (1944-52 ई.)–डॉ. अमृता कुमारी 1348
प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास लेखन : एक मूल्यांकन–डॉ. अनिल कुमार सिन्हा 1352
आधुनिक मिथिला में कृषि की स्थिति : एक विश्लेषणात्मक अध्यन–गोविन्द कुमार झा 1358
भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में अनीश्वरवादी मत की समस्या और इसका प्रभाव–डॉ. मनोज कुमार 1361
श्री गुरु नानक वाणी में जीवन मूल्य–डॉ. हरबंस सिंह 1367
सहरिया जनजाति की धार्मिक मान्यताएँ–प्रियंका सिन्दल 1371
सशक्त जन गीतकार डॉ. वशिष्ठ अनूप–डॉ. मनीषा मिश्रा 1374
"कथाकार रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा-साहित्य में लोकभाषा"–कपिल देव पँवार 1379
नीतीश कुमार की राजनीतिक एवं मुख्य चुनौतियां : एक विमर्श–डॉ. रुपक कुमार 1384
शिवमूर्ति की कहानी तिरिया चरित्तर में नारी संघर्ष की दास्ताँ–शिवाली शर्मा 1388
स्त्री साहित्य की अवधारणा–डॉ. मीनाक्षी 1393
भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा : एक ऐतिहासिक विश्लेषण एवं चिन्तन–डॉ. रणधीर कुमार गुप्ता 1397
शोध स्तर पर संचालित पाठ्यक्रम आधारित कार्यक्रम की प्रासंगिकता का अध्ययन–विरेन्द्र कुमार सिंह 1400
नेपाल-भारत संबंध का भारत के आंतरिक सुरक्षा पर प्रभाव: एक अध्ययन–डॉ. विनीता भारद्वाज 1407
बिहार में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में जीविका का योगदान–मोनिका कुमारी 1412
विजय जोशी के कथा साहित्य में बाल मनोवैज्ञानिक विश्लेशण–श्रीमती सुमन डागर; डॉ. गीता सक्सेना 1417
भारतेन्दु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता का वैचारिक स्वरूप–डॉ. रामचरण पांडेय 1421
झारखंड के आदिवासियों का आर्थिक जीवन और गाँधी–डॉ. दीक्षा कुमारी 1425
हिन्दी आलोचना और डॉ. नामवर सिंह–डॉ. कीर्ति माहेश्वरी 1430

विद्यार्थियों के सांवेगिक व्यवहार का उनके आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा लिंग-भेद के संदर्भ में अध्ययन
—डॉ. श्याम सुन्दर कुशवाहा; तनुज कुमार 1435
शारीरिक शिक्षा का दर्शन—डॉ० सितेश कुमार 1441
हिन्दी आदिवासी कविता मेंप्रतिरोध का स्वर—डॉ. हनुमान सहाय मीना 1446
कुशीनगर जनपद में जनसंख्या घनत्व प्रकारात्मकता—डॉ. मंकेश्वर दत्त राय 1450
बदलती सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था में तीसरी दुनिया—डॉ. राम बिनोद रे 1454
सुमित्रानंदन पन्त पर गाँधी का प्रभाव—गुड्डू कुमार 1460
स्त्री अस्मिता, मीडिया और बाजार—डॉ. रविंद्र सिंह 1464
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट एवं एम.एस.एम.ई. द्वारा संचालित व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों
की प्रभावशीलता का प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक सफलता के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन
—प्रियंका कुमारी; प्रो. गुरप्यारी सतसंगी 1469
बिहार की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण तथा पर्यटन की संभावनाएँ—प्रेमलता कुमारी 1474
ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति—नूतन गुप्ता 1479
महर्षि वाल्मीकि की दृष्टि में नारियों की उच्च आर्थिक स्थिति—डॉ. वीरेंद्र प्रसाद ''भास्कर'' 1483
द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिकी विदेश नीति : एक विश्लेषण—डॉ. चरण दास 1487
'पाणिनि युग में प्रशासनिक क्षेत्र का महत्व'—डॉ. कहकशाँ प्रवीण 1491
इन्द्रधनुषी क्रान्ति और भारत का कृषि विकास—शम्मी कुमारी 1498
'भारत छोड़ो आंदोलन का भारत की स्वतंत्रता में भूमिका'—उषा कुमारी 1501
कुछ अनछुए पक्ष : विक्रमशिला महाविहार—डॉ. नूतन कुमारी 1503
सत्य तत्व के संवाहक : बाबा जगजीवन दास शोध सारतत्व—कंचन गुप्ता 1509
व्यक्ति व समाज की कालात्मक अभिव्यक्ति : साहित्य—डॉ धीरज कुमार 1513
"कार्य संतुष्टि की अवधारणा में फ्रेडरिक हर्जबर्ग का योगदान"—डॉ. धनंजय कुमार 1518
जलवायु परिवर्तन के परिवेश में 'जल-जीवन-हरियाली' अभियान की प्रासंगिकता—अमिता चन्दन 1523
समकालीन कहानीकार- उदय प्रकाश—रेखा; डॉ. अनिरुद्धन 1528
थर्डजेंडर कानून के दायरे में (वैधानिक प्रावधान)—वंदना शर्मा 1530
मिथिला क्षेत्र का उदय, प्रसार तथा परिवेश—डॉ. डिम्पल कुमारी 1534
राधिकारमण प्रसाद सिंह के नाटकों में सामाजिक चेतना—डॉ. ज्योति कुमारी 1537
कार्ल मार्क्स : मानव मुक्ति का महत्वपूर्ण हथियार—डॉ. पंकज कुमार 1540
कोरोनाकाल में महिलाओं की भूमिका: एक आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन—डॉ० सीमा कुमारी 1548
भारत-चीन सीमा विवाद : डोकलाम विवाद एवं पैंगोंग त्सो झील—अरुण मेघवाल 1550
सेकुलरवाद के भारतीय स्रोत—डॉ० आलोक कुमार श्रीवास्तव 1553
मंजूर एहतेज़ाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता—सुमन देवी 1562
भारत में सामाजिक और धार्मिक अंधविश्वास—डॉ. हीरा कुमारी 1565
बिहार में औद्योगिक विकास और लघु उद्योग की स्थिति—डॉ. नवीन कुमार 1568
अरुण कमल की प्रकृतिपरक कविताओं का विश्लेषण—डॉ. ललिता कुमारी 1571
वर्त्तमान परिदृश्य में ग्रामीण हाट बाजार: अवसर और चुनौतियाँ—मनीषा कुमारी 1576

बदलती सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था में तीसरी दुनिया

डॉ. राम बिनोद रे

सहायक आचार्य, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड, केरल

उत्तर उपनिवेशवाद के दौर में तीन दुनिया उभरकर आई, पहली दुनिया वर्चस्वशाली, विकसित, समृद्ध देश है जो सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करता है। दूसरी दुनिया जो अधीन और हाशिए पर है, अविकसित और पराधीन है। तीसरी दुनिया स्वतन्त्र होकर आज भी मानसिक रूप से गुलाम है। इसका सबसे बड़ा उदहारण अंगेजी और पाश्चात्य संसाधनों, सुविधाओ के प्रति प्रेम घर, परिवार, संस्था, समुदाय में हम देख पातें हैं। ईगल्टन टेरी यह मानकर चलतें है– वास्तविक चेतना और संभावित चेतना में समन्वय स्थापित होना चाहिए। संस्कृति केवल ब्रहम सत्य और जगत मिथ्या कहकर अध्यात्म की बात नहीं करती है बल्कि आत्मीयता। सह्दयता और अपने को सुदृढ़ कर आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा देती है। कबीर दास जी कहतें है–

साईं इतना दीजिए जा में कुटुम समाय
मै भी भूखा न रहूँ साधु ना भूखा जाए
(कबीर ग्रंथावली)

अर्थात् हे परमात्मा तुम मुझे इतना दो कि जिसमें बस मेरा गुजारा चल जाए, मै खुद भी अपना पेट पाल सकूँ और आनेवाले मेहमानों को भी भोजन करा सकूँ। यही हमारी सभ्यता और संस्कृति है। गाँधी जी इसी को स्पष्ट करते है- "सभ्यता वह आचरण है जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने के माने है नीति का पालन करना। नीति के पालन का मतलब है अपने मन और इन्द्रियों को बस में रखना। ऐसा करते हुए हम अपने को (अपने असलियत) को पहचानते हैं।" (हिन्द स्वराज-42) अर्थात स्वत: को पहचाने की जरुरत है। मै कौन हूँ, मेरे होने का मतलब क्या है अर्थात् जब हम स्वयं को पहचानने लगेंगे तो हमारे संस्कार रूपी संस्कृति स्वत: समाज में संप्रेषित होगी। स्वत को पहचानने का मतलब है, परम्परागत सांस्कृतिक संबंधों को आत्मसात करना। जो भारतीय संस्कृति में स्वत-स्फुटित है। पहले जहाँ संस्कृति अध्यात्म से पूरित था, अब अर्थव्यवस्था से जुड़ने लगी है। कहतें है इच्छा से मुक्त होना अध्यात्म है, पर किसी भी राष्ट्र को समृद्ध और विकसित होने के लिए अध्यात्म के साथ आर्थिक रूप से मजबूत होना उतना ही आवश्यक है। जिसके पीछे सांकृतिक समग्रता कार्य करती है। वर्तमान समय में कोरोना-19 वैश्विक महामारी जहाँ सम्पूर्ण विश्व को आक्रांतित किया हुआ है पर भारत जैसे विकासशील देश की जनसँख्या एक-सौ-तीस करोड़ होने के बावजूद महामारी से लड़ने की छमता रखता है, इसके पीछे पारंपरिक संस्कार और संस्कृति अवदान कार्य करती है। इसका सबसे बड़ा उदहारण संयुक्त परिवार, बड़ों का आदर, हाथ जोड़ कर प्राणम, औरतों द्वारा मुह में दुपट्टा रखना, गमछा बांधना, खान-पान में जिस मसाले युक्त चाय, सब्जी, जैसे देशीय खान-पान हमारी आन्तरिक शक्ति को बढ़ाती है। हमारे देश में जडीबुटी के अथाह भण्डार है। दुर्भाग्यवश इसका प्रयोग वैश्विक महामारी बर्ड-फ्लू, चिकन-पॉक्स, प्लेग, एड्स जैसी महामारी से सामना करनेहेतुनहीं किया गया इसके बावजूदअधिकांशत वैज्ञानिक,भारत में शिक्षा ग्रहणकर विदेश में जाकर अपनी सेवा प्रदान करते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का कथन है, अपने पौरुष से हताश जाति सदेव ईश्वर की शरण में जाता है। ईश्वर के प्रति आस्था सदेव मनुष्य को शक्ति प्रदान करता है,यहाँ आस्था से सम्बन्ध अंध-आस्था से नहीं बल्कि जीने की राह दिखाता है। नई सोच, चिंतन, विचारधाराएँ आदि में बदलाव और नए भविष्य का निर्माण करती है। वैश्विक विषमताएं मनुष्य के अन्दर जो अवसाद पैदा करता उससे मुक्ति की रह दिखाता है।

भारतीयता का मूलमंत्र है 'मै' के स्थान पर 'हम' की स्थापना करना। सहजता, सहृदयता, सहिष्णुता, विशाल ह्रदय, आदि भाषा के माध्यम से भारतीयता की पहचान होती है, व्यक्ति का समष्टि, संस्था, विचार के रूप में परिवर्तित होना एक सामान्य घटना नहीं है। इसके पीछे व्यक्तित्व के अन्त: में निहित भाषा, परिस्थितियां, परिवेश और सिद्धांत स्वत में अपनी भूमिका अदा करती है। महामारी के आरंभिक दौर सबसे पहले केरल राज्य में बड़ी तीव्रता से फैला।कासरगोड जिला में इसकी संख्या सबसे अधिक थी। उस समय केरल ने अपनी जडी-बुटी से युक्त संस्कृति, सभ्यता और अर्थ-नीति को प्रमुख औजार बनाया। प्लाज्मा थेरेपी के माध्यम से कोरोना से पीड़ित मरीजों का इलाज किया गया। जिसमें भारतीयता की पहचान मौजूद है। कासरगोड जिला में इसकी संख्या सबसे अधिक थी। जब प्लाज्मा थरेपी का प्रयोग आरंभिक दौर में दिल्ली में प्रयोग किया गया, उतनी सफलता नहीं मिल सकी, बाद में एक सेंटर बना दिया गया जिसके परिणाम सकारात्मक रहीं है। कासरगोड जिला में इसकी संख्या सबसे अधिक होने के कारण अरब देशों में काम करनेवालों की संख्या सबसे ज्यादा है। अन्य राज्यों की तुलना में शिक्षा, औषिधि और सूचना-प्रोद्योगिकी में नंबर एक है। इसे डिजिटल स्टेट कहा जाता है। महामारी के समय भारत सरकार द्वारा दिए गए नीति का अनुपालन, सहनशीलता और धैर्य से अपनाते गए। अत: यह जिला एक मॉडल के रूप में उभर कर आया। अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है भारतीय सभ्यता और और संस्कृति से जुड़े प्रयोगों को हम हीनता की दृष्टि से देखते है और पश्चिमी को अपनाने में हम तनिक भी परहेज नहीं करतें है।

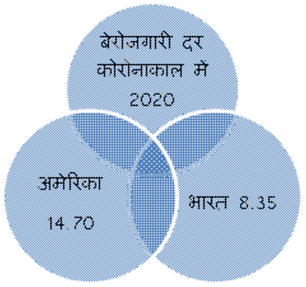

भूमंडलीकरण के दौर में भारत बहु-सांस्कृतिक और बहु-भाषाई समस्याओं से जुझ रहा है। जिस विश्वग्राम की परिकल्पना हम कर रहे है, उसमें समन्वय,सद्भावना, भाईचारा और आत्मनिर्भर हो पर यह कैसे संभव है। मुझे गाँधीजी याद आते है, जिन्होंने गाँधी, खादी और हिंदी को महत्व दिया था। भारतीय समाज में अर्थ केंद्र में कभी नहीं रहा पर यह भी सत्य है, वर्तमान समय में अर्थ के बैगैर जीवन का संचरण संभव नहीं है। यहाँ गाँधीजी एक विचारधारा, शिक्षा-संस्था और संगठन, है तो दूसरी ओर खादी जिसका सम्बन्ध अर्थ और व्यापार से है। भारत वर्तमान में इसके निर्यात से काफी लाभान्वित हुआ है। तीसरा जो प्रतीक है भाषा, संस्कृति, समाज। यह तीनो ही हमें आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा देती है। चूकिं गांधीजी ने कहा था– मै नहीं चाहता कि मेरे घर के दरवाजें और खिड़की बंद रहे। ताकि दुसरे देश की संस्कृति, समाज, साहित्य, भाषा आदि से रूबरू हो सके और आगे कहते है– यदि उस संस्कृति से देश की संस्कृति के पांव उखर जाए यह मुझे मंजूर नहीं।" (हिन्द स्वराज-42)

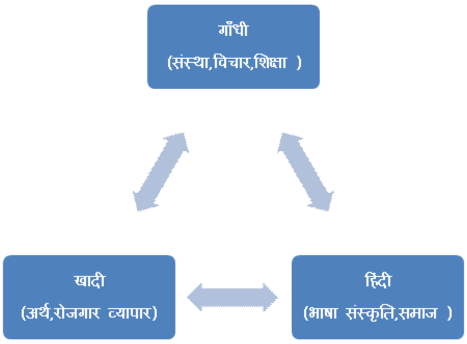

वर्तमान विश्वग्राम के नाम पर आर्थिक और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को स्थापित कर उपभोगतावाद और बाजारवाद को स्थापित करना है। साम्राज्यवाद के कारण भारतीय भाषाओं और संस्कृति के मध्य एक बड़ी खाई बनती जा रही है और एक नई टेक्नोभाषा की प्रक्रिया शुरू होने लगी है, जिससे भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा है।

डॉ. रामविलास शर्मा जी मानते है कि "ऐसा लगता है कि हिंदी और अहिन्दी भाषियों की लड़ाई की वजह से अंग्रेजी यहाँ जमी हुई है, बात इससे ठीक उलटी है। यह नव-उपनिवेशवाद के प्रसाद के लिए हिंदी और अहिन्दी भाषियों को लड़ाया जाता है।" महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण; डॉ.रामविलास शर्मा; पृष्ट-200; वर्तमान व्यावसायिक विस्तार हेतु जन-मीडिया का सहारा लेता है। जन मीडिया जन-भाषा के माध्यम से घर-घर तक पहुँचाने का प्रयास किया है। सम्पूर्ण विश्व में करोना-19 महामारी है। विश्व का आर्थिक ढांचा चरमरा गया है, घर से निकलने की अनुमति नहीं है सम्पूर्ण लेनदेन, प्रशासनिक सूचनाएं आम जनभाषा में दी जा रही है। भाषाई प्रयुक्ति में बढ़ोतरी अनेक तकनीकी संसाधनों और उपकरणों के कारण होता है ताकि एक वृहत भाषाई समुदाय का निर्माण किया जा सके। जिन भाषाओँ का प्रयोग अल्प समुदाय के लोग किया करते हैं, उन भाषाओँ को वर्तमान सुविधाओं का सहारा न मिल पाने के कारण लगभग समाप्त-सी हो गई है। कम प्रयोग में लाई जानेवाली भाषा को व्यापार और शिक्षाका माध्यम नहीं बनाया गया। जबकि उन भाषाओँ का प्रयोग तकनीकी सुविधाओं के साथ आगे बढाया जा सकता है। इससे एक भाषाई परिवर्तन, भाषाई गठन और भाषाई विकास की संभावनाओं में देखने को मिलता है। सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन (CENTRAL INSTITUTE OF EDUCATION) 2013 के हवाले से यह स्पष्ट किया गया था कि 'यह अच्छी तरह स्वीकार किया गया है कि सूचना और प्रद्योगिकी (ICT) में बच्चों, शिक्षकों, शिक्षाविदों और अन्य पर प्रभाव डालने की अपार क्षमता होती है। वह हमारे देश में आनेवाले सभी चुनौतियों को कम और साझा करने में अपनी अहम् भूमिका अदा कराती है। भाषाई विविधता से एक विशेष प्रकार की भाषाई निर्माण होती है। I'Some Technological progress facilities the developments of tools and resources usable for the maintenance and cultivation of low density languages and creation of viable Communities out of Linguistics Diasporas'.(Language and Globalization, edited by Nikolas Coupland, Wiley-Blackwell, 2010, P-142)

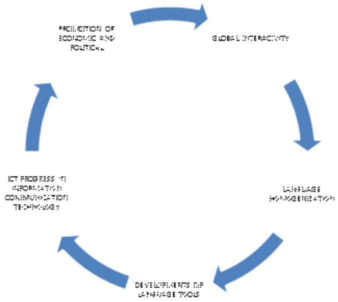

TECHNOLOGICAL PROGRSS FACILITY

मोबाइल में प्रयुक्त भाषा का प्रयोग मोबाइल कंपनी द्वारा किया जाता है। कभी-कभी त्री-भाषा सूत्र भी देखने को मिलता है। अगर केरल में पंजीकृत फोन दिल्ली में मौजूद है, तो वक्ता और श्रोता की सुविधा हेतु मलयालम, हिंदी और अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। एक कहावत है 'जैसा देश वैसा भेश' मांग की पूर्ति और मांग की लोच जरुरत, स्थान, समय, व्यक्ति और परिवेश के अनुसार भाषाई स्थिति तैयार करता है। उदारवादी अर्थव्यवस्था आमजन तक पहुँचने के लिए भाषाई संस्कृति से खेल खेलता है। एक ऐसी केन्द्रीय भाषाई संस्कृति का निर्माण करता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ सकती है। भारतीय और पाश्चात्य के मध्य सांस्कृतिक टकराहट है। परिणामत: केंद्रीय संस्कृति का निर्माण हो रहा है। इन्टरनेट, मोबाइल, कंप्यूटर आदि प्रद्योगिक यंत्र-वाहक के रूप में कार्य कर रही है। चूँकि केंद्रीय भाषा शासन, शिक्षा, न्यायालय, राजनीति, संसद आदि को संचालित करती है। अत: भाषा को संचालित करने और परिवर्तित करने का कार्य विशेष सत्ताधारी वर्ग के हाथ में होता है। परिवर्तन का आरंभिक स्वर सताई व्यवस्था से आवश्यक है और सामान्य जन द्वारा नियमावली का अनुपालन किया जाना चाहिएप्

सम्पूर्ण विश्व एक बाजार के रूप में सामने आया है और उसविश्व बाजार में भारत का विशेष स्थान है। आज भारत देश दुनिया की तेजी से उभरती हुई आर्थिक शक्तियों में बाजार के रूप में गिना जाता है। उपभोक्ता वर्ग विश्व और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। बाजार में निवेश और व्यापार के लिए भाषा का सीखना अत्यंत आवश्यक है, तभी निवेशक अपने वस्तु को जन-जन तक पहुँचा सकता है। टी.वी. में प्रसारित होनेवाले हिन्दी के विज्ञापन इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। आज भारत पूरे विश्व में अनेक वस्तुओं का निर्यात कर रहा है। भारत पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। चीन से 2019 -20 आंकड़ों के अनुसार 70.32 बिलियन डालर भारत में आयात किया जाता है और अमेरिका को 52.43 बिलियन डॉलर निर्यात करता है। आयातित प्रत्येक वस्तुओं के भुगतान पर भारतीय जनता का पैसा भारत के लिए उपयोग में आने की बजाय विदेशी खातों में चला जाता है। मुझे भारतेंदु जी याद आते है पै धन विदेश चली-जात है। संस्कृति से जुड़े वस्तुओं का ही नहीं बल्कि अनेक अध: अधुनातन प्रद्योगिकी संसाधनों से युक्त साधन टिक-टॉक,लाइव मी. कीवी, हेलो, लाइक, जूम, विश आदि अनेक ऐप का प्रयोग करतें हैं और भारत केवल श्रमिक मात्र बना रहा जाता है। भारतीय भूमि पर, भारतीय संसाधनों का उपयोग कर, भारतीयों के जेब खाली करवाने का काम विदेशी वाणिज्य द्वारा अंजाम दिया जाता है। भारत और उसके विरोधभास नामक पुस्तक में लिखा गया है 'एशिया तथा अफ्रीका के कई देशों के साथ भारत ने भी उपनिवेशवाद को एक बाधा के रूप में देखा जापान अपने खोल में घुस गया और उसने खुद को दुर्भाग्य से बचा लिया उपनिवेशवाद भारत, चीन, मलेशिया, इंडोनेशिया तथा अन्य देश जिस तरह व्यापार के जरिये अपना पैर जमाया, उसे जापान ने अपने यहाँ इस तरह नहीं घुसने दिया' (भारत और उसके विरोधाभास पृष्ट-52) बाजार और खनिज संसाधनों के साथ-साथ मानवीय संसाधनों के तौर पर विश्व में भारत की अपनी एक अलग पहचान बनी है। लोकतान्त्रिक देश होने के नाते आजादी के बाद भारत का एक सपना थाप् भारत अपने खनिज संसाधनों की सहायता से उत्पादन करेगा और विश्व बाजार में अपना मॉल निर्यात कर लाभ कमाएगा और उस लाभ से सामाजिक कार्य किया जाएगा। यह केवल एक सपना मात्र रह गया। जहाँ भारत एक ओर उपभोक्ता (consumer) तैयार करने का साधन मात्र रह गया है तो दूसरी ओर भारतीय संसाधनों का दोहन कर विदेशी कंपनियों (Multi&National Company) को फायदा पहुँचाने का कार्य भी कर रहा है। वर्तमान समय में भारत का सकल

घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) 4.5 प्रतिशत 2019 में हैं जो 2018 में 7 प्रतिशत था। पिछले छ.वर्षो में सबसे कम है। जबकि तमिलनाडु राज्य में बेरोजगारी की संख्या 1.1 प्रतिशत है। यहाँ की क्षेत्रीय भाषा तमिल है जो संस्कृत से भी पुरानी है ये सदैव अपनी भाषा,संस्कृति,समाज से। यार करतें है और अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है। भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और मनोविज्ञान की संकल्पना के सहयोग से सांस्कृतिक राष्ट्र का निर्माण संभव है। इसी संभव को पूर्ण करने हेतु मैंने कुछ रोड मैप तैयार किया है जो निम्नलिखित है -

1. किसानी व्यवसाय का केन्द्रीयकरण - भारत कृषि प्रधान देश है। भारत का कुल क्षेत्रफल 3287263°C है, 2016 के अनुसार 60.45% खेतिहर भूमि रही है। यह हमारी संस्कृति है, किसान शब्द से हमारे मस्तिष्क में यह धारणा बनी हुई है-किसान गरीब, असहाय, अनपढ, मूर्ख, ग्वार, जाहिल का प्रतीक है। भुखमरी की जिंदगी जीता है जैसे प्रेमचंद गोदान में होरी के माध्यम से देखतें है। आज किसान अपने खेत को छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर चुकें है। पलायन की संख्या कितनी है, इसका अंदाजा दिसम्बर 2019 में अदृश्य दुश्मन के आगमन से ही पता चलता है। अब रिवर्स पलायन देखने को मिल रहा है। अगर इसी तरह पलायन, स्थानान्तरण और पुनर्वास चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब विदेशी कंपनी किसानों की खेतिहर भूमि खरीदकर सिचाई में अपना हाथ अजमाने लगेंगे और हमारे किसान अपनी ही भूमि में मजदूर बनकर रह जायेंगे। यह एक चिंता का विषय है। किसानी संस्कृति को मजबूती हेतु किसानी का केन्द्रीयकरण किया जाना आवश्यक है।
2. भारत को यंग इंडिया और ग्रोइंग इंडिया कहा जाता है। युवाओं की संख्या ज्यादा है, जो देश की आबादी का 65 प्रतिशत है। अत: 15 से 25 वर्ष के युवाओं के रूचि और योग्यतानुरूप 3 वर्ष के लिए संस्कृति, समाज, वस्तुकला, प्राकृतिक संरक्षण, व्यापार, भाषा गठन, वस्तु-निर्माण, सूचना प्रद्योगिकी, विनिमय, प्रशासन, राजनीति और कृषि से संबंधित व्यवहारिक प्रमाणपत्र 'भारतीय संरक्षण प्रमाणपत्र' की अनिवार्यता की जानी चाहिए।
3. अधुनातनउपकरणोंके लिए INDIAN SATATICAL INSTITUTE केतर्ज पर INTERNATIONALCONSUMER AND COMMUDITY INSTITUTE निर्माण हो जो भारतीय संस्कृति, संसाधन और भाषाई गुणवत्ता परआधारित हो।
4. आंतरिक विकासहेतुपरिकल्पना (HYPOTETHESIS) को जांचने और परखने की व्यवस्था होनी चाहिए। जिसके लिए परामर्श सेवा संस्थान का गठन हो।
5. अधतनअधुनातन संसाधनों से युक्त कार्यशाला INOVATION PROJECT CENTRE प्रत्येक संस्थानों में अनिवार्य है। बाल्यावस्था काल से छात्रों के लिए अनिवार्यरत हो, ताकि INOVATION PROJECT जैसे कार्यक्रम में भाग ले सके।
6. 'टोफेल' (TOEFL), 'आइलेट्स' (ISLETS) 'टोईका' (TOEIC), की भांति भारतीय भाषाओँ पर हिन्दी लैग्वेज प्रोफिसिएन्सी टेस्ट (HLPT) हो।
7. ऑनलाइन पाठ्यक्रम हेतु और साहित्य निर्माण में VOICE BOX का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे खर्च डठ में कम होता है, आसानी से उपलब्ध हो सकता है। वीडियो में 2G, 3G, 4G की आवश्यकहोती है, सभी के लिए यह संभव नहीं हो सकता।
8. विद्यालय, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में लोक-जीवन तथा लोक-संस्कृति का समावेश किया जाए। लोक संस्कृति से राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। लोक-जीवन, लोक-साहित्य पर शोध परियोजना को वरीयता एवं प्रोत्साहन दिया जाए। चूंकि लोक साहित्य और जीवन में हमारी परंपरागत संभावनाएं छिपी है। प्रत्येक केंद्रीय विश्वविद्यालय में वस्तुकला संकाय के साथ स्थाई कार्यशाला का गठन हो ताकि निर्मित वास्तुकला मॉल संस्कृति के एवज में हो सके।
9. विभिन देशों में शिक्षकों का आदान-प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वैश्विक एकता के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की पहचान विश्व स्तर पर फैल सके।
10. विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, सरकारी और गैर सरकारी अधिकारियों सामान्य प्रयोक्ताओं आदि के लिए तकनीकी कार्यशाला आयोजित हो। इससे कार्य कुशलता में बढ़ोतरी होगी और यह छात्रों के लिए तकनीकी ज्ञान हेतु उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत और उसके विरोधाभास, ज्यां द्रेज और अमर्त्य सेन, अनु-अशोक कुमार राजकमल प्रकाशन, 2019
2. हिन्द स्वराज, मोहनदास करमचंद गाँधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, वर्ष-2011
3. महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण; डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 2018
4. कबीर ग्रंथावली, श्यामसुंदरदास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. Language and Globalization, edited by Nikolas Copland, Wiley-Blackwell, 2010,
6. Language and Globalization, edited by Nikolas Coupland, Wiley-Blackwell, 2010
7. Language in social group, California university press, Berkeley,1969
8. Language, Bloomfield, MotilalBanarasi Das, Delhi, 1935
9. Language and Political Economy, Judith T .Irvine,1989
10. 1. https://www.patrika.com/jaipur-news/65-or-31-per-cent-of-the-youth-population-1135895/
11. https://jaunpur.prarang.in/tagcategory.php?tagid=37&name=%E0%A4%AD%E0%A5%82%E0%A4%AE%E0%A4%BF%20%E 0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%20(%E0%A4%96%E0%A5%87%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%B0%20%E0%A4%B5%20%E0%A4%AC%E0%A4%82%E0%A4%9C%E0%A4%B0)
12. https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/list-of-top-10-export-and-import-partners-of-india-in-hindi-1584169097-2